Self Respect

14-07-2014

✓बाप कहते हैं कि हम बच्चे-बच्चे कहते हैं तो आत्माओं को ही देखता हूँ, शरीर तो पुरानी जुत्ती है । यह सतोप्रधान बन नहीं सकता । सतोप्रधान शरीर तो सतयुग में ही मिलेगा । अभी तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन रही है ।

✓तुमको मेहनत ऐसी करनी है जैसे कल्प पहले की है, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो फिर आहिस्ते- आहिस्ते सारे विश्व की डोर तुम्हारें हाथों में आने वाली है । ड्रामा का चक्र है, टाइम भी ठीक बताते हैं । बाकी बहुत कम समय बचा है ।

✓तुम जब बाप के बच्चे बने हो तो तुम भी गाली खाते हो । बाबा ने समझाया था- अभी तुम कलंगीधर बनते हो । जैसे बाबा गाली खाते हैं, तुम भी गाली खाते हो । यह तो जानते हो कि इन बिचारों को पता नहीं है कि यह विश्व के मालिक बनते हैं । 84 जन्मों की बात तो बहुत सहज है । आपेही पूज्य, आपेही पुजारी भी तुम बनते हो । कलंगीधर बनने वालों पर कलक लगते हैं, इसमें नाराज़ नहीं होना चाहिए

✓यह नॉलेज एक बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता । रचता और रचना का ज्ञान यह है पढ़ाई, जिससे तुम स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्रवर्ती राजा बनते हो । अलंकार भी तुम्हारे हैं परन्तु तुम ब्राह्मण पुरूषार्थी हो इसलिए यह अलंकार विष्णु को दे दिया है । यह सब बातें - आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, कोई भी बता नहीं सकते ।

✓तुम बाप से वर्सा पा रहे हो तो अन्दर में खुशी होनी चाहिए । वह तो वर्से को जानते ही नहीं ।

✓अभी यह बाबा लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जायेंगे तो कहेंगे ओहो! यह तो हम बनते हैं । इनकी पूजा थोड़ेही करेंगे । नम्बरवन बनते हैं तो फिर सेकण्ड थर्ड की पूजा क्यों करें । हम तो सूर्यवशी बनते हैं । मनुष्यों को थोड़ेही पता है । वह तो सबको भगवान् कहते रहते हैं । अंधकार कितना है । तुम कितना अच्छी रीति समझाते हो । टाइम लगता है । जो कल्प पहले लगा था, जल्दी कुछ भी कर नहीं सकते ।

✓हीरे जैसा जन्म तुम्हारा यह अभी का है । देवताओं का भी हीरे जैसा जन्म नहीं कहेंगे । वह कोई ईश्वरीय परिवार में थोड़ेही हैं । यह है तुम्हारा ईश्वरीय परिवार । वह है दैवी परिवार । कितनी नई-नई बातें हैं । गीता में तो आटे में नमक मिसल है ।

✓तो तुम बच्चे विश्व का मालिक बनते हो । बाप कितना ऊंच बनाते हैं, गीत में भी है ना सारे विश्व की बागडोर तुम्हारे हाथ में होगी । कोई छीन न सके । यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे ना । उन्हों को पढ़ाने वाला जरूर बाप ही होगा ।

✓**वरदान:** तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सभी बंधनों को क्रास कर मनोरंजन का अनुभव करने वाले डबल लाइट भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।